विसर्गसन्धि : तृतीय कालांश

११४ एतत्तदोः सुलोपोऽकोरनञ्समासे हलि

अककारयोरेतत्तदोर्यः सुस्तस्य लोपो हलि न तु नञ्समासे । एष विष्णुः । स शम्भुः । अकोः किम् ? एषको रुद्रः । अनञ्समासे किम् ? असः शिवः । हलि किम् ? एषोऽत्र ।।

ककार रहित एतद् तथा तद् शब्द का जो सु, उसका लोप होता है, हल् परे रहते, नञ् समास को छोड़कर।
एष सु विष्णुः

एष विष्णुः एतत्तदोः सुलोपोऽकोरनञ्समासे हलि सूत्र से सु का लोप हुआ।

अकोः किम्? एषको रुद्रः

ककार रहित एतद् और तद् के सु का लोप होता ह। क रहने पर सु लोप नहीं होगा जैसे- एषक सु रु रुद्रः = एषको रुद्रः ।

अनञ्समासे किम्? असः शिवः

यदि एतत् और तद् में नञ्समास हो तो इनके सु का लोप नहीं होता। जैसे- अस सु शिवः= असः शिवः।

हलि किम्? एषोऽत्र।

हल् परे होने पर ही एतद् और तद् के सु का लोप होता है अन्यत्र यथा प्राप्त उत्च पूर्वरुपादि कार्य होते है। जैसे- एष सु अत्र= एषोऽत्र

११५ सोऽचि लोपे चेत्पादपूरणम्

स इत्यस्य सोर्लोपः स्यादचि पादश्चेल्लोपे सत्येव पूर्येत । सेमामविड्ढ प्रभृतिम् । सैष दाशरथी रामः ।।

सः पद के सु का लोप हो अच् परे रहते यदि लोप करने से पाद की पूर्ति हो रही हो तब।
सस् + इमाम् सस् के सु(स्) का लोप हुआ
स इमाम् आद् गुणः से गुण
सेमामविड्ढि प्रभृतिं च ईशिषे सिद्ध हुआ। एक पाद की पूर्ति हो गयी। यह जगती का एक चरण है। जगती एक वैदिक छन्द है।
स सु एष दाशरथी रामः
स एष दाशरथी रामः सोऽचि लोपे चेत्पादपूरणम् सूत्र से सु का लोप
सैष दाशरथी रामः वृद्धिरेचि सूत्र से वृद्धि एकादेश

विशेष- यदि पाद पूर्ति होगी तभी सु का लोप होगा। यदि सु के लोप के बिना ही पाद की पूर्ति हो जायेगी तो इस सूत्र की उपयोगिता नहीं रहेगी। जैसे- सोऽहमाजन्मशुद्धानाम् इत्यादि।

संस्कृत प्राध्यापक साजन कुमार
एस बी एस एस कॉलेज बेगूसराय